जामिया मिल्लिया इस्लामिया द्वारा पी एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध (डॉक्टर ऑफ फिलोसफी इन हिस्ट्री)

अध्ययन का विषय

दिल्ली में स्थापित मध्यकालीन सूफियों की दरगाहों की स्थापत्यकला की विशेषताओं का अध्ययन

(तेरहवीं शताब्दी ई0 से अठारहवीं शताब्दी ई0 तक)

शोधकर्ता

मोहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान

शोधनिर्देशक

प्रो0 एस0 एम0 अज़ीजुद्दीन हुसैन

इतिहास एवं संस्कृति विभाग जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली–110025

दरगाह स्थापत्यकला की महत्त्व की ओर जब ध्यान आकृष्ट करते है, तो पाते हैं कि भारतीय समाज में दरगाह स्थापत्य कला का विशेष महत्त्व है, कारण कि "मज़ाराते औलिया–ए–देहली" में दिल्ली में कुल 184 सूफ़ियों के मज़ार का उल्लेख किया गया है। परन्तु जिस मज़ार के ऊपर दरगाह की स्थापना की गई है, केवल उन्हीं से समाज का सम्बंध स्थापित है, शेष सूफियों के मज़ार समाज की दृष्टि से विलुप्त हो गए। केवल इन सूफिया का वर्णन इतिहास के पन्नों तक ही सीमित होकर रह गया है। जिन दरगाहों की स्थापना में सुल्तानों, बादशाहों एवं उमरा ने रूचि ली, वही दरगाहें विशेष रूप से समाज में चर्चित एवं श्रद्धा के पात्र बनीं जैसे कुतबुद्दीन बख्तियार काकी, शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया और शेख़ नसीरूद्दीन महमूद चिराग–ए–देहली की दरगाह से सुल्तानों एवं बादशाहों तथा उमरा ने विशेष रूचि दिखाई, समय समय पर उसकी स्थापत्य कार्य करते रहे। आज यही तीनों दरगाहें दिल्ली में मुख्य रूप से प्रसिद्ध हैं, और यहाँ प्रतिदिन लोगों का जमघट लगा रहता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इन सूफ़ियों के व्यक्तित्त्व को उजागर करने में तथा समाज में उनके नाम को बाकी रखने में दरगाह स्थापत्य कला की विशेष महत्त्व एवं भूमिका दिखाई पडती है।

पैगम्बर–ए–इस्लाम हज़रत मुहम्मद स0 की क़ब्र पर हुए स्थापत्य कार्य को ही आधार बनाकर हिन्दुस्तान में सूफिया एवं सुल्तानों की क़ब्रों पर स्थापत्य कार्य किये गये, और नबी की क़ब्र मस्जिदे नबवी से सटे होने का आधार बनाकर हर दरगाह एवं मकबरे के साथ एक मस्जिद की स्थापना भी की गई। इस स्वरूप के आधार पर दिल्ली में प्रथम मक़बरा अर्थात दरगाह 1229ई0 में सुल्तान गारी की स्थापित की गई। जिसकी स्थापना सुल्तान इल्तुतमिश ने की थी। इसी के साथ हिन्दुस्तान में मक़बरा एवं दरगाह की स्थापना की परंपरा आरम्भ हो गई, और 1240ई0 में शम्सुल आरफ़िन तुर्कमान शाह बयाबानी सुहरवर्दी की दरगाह की स्थापना सुल्तान मुईजुद्दीन बहराम शाह के काल में फिरोजाबाद में की गई।

- स्थापित दरगाह की स्थापत्यकला की विशेषताओं का अध्ययन करना।
- स्थापित दरगाह की स्थापत्य इतिहास क्या है? इस पर प्रकाश डाला गया है और उसमें लगे क़तबे और अंकित अरबी और फारसी के लेखों को नोट किया गया है।
- स्थापित दरगाह की पूर्व की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।
- सभी दरगाहों की फोटोग्राफी कर, उसके स्वरूप एवं वर्तमान स्थिति को, प्रमाण के रूप में अध्ययन के साथ प्रस्तुत किया गया है।
- दरगाह के अन्दर मदफून उस सूफ़ी के जीवन सम्बंधी संक्षिप्त इतिहास को भी प्रस्तुत किया गया है।
- इन दरगाहों से मध्यकालीन शासकों के सम्बंध कैसे रहे इस ओर भी प्रकाश डाला गया है।

इस अध्ययन का स्वरूप पूर्ण रूप से ऐतिहासिक है, जिसके अन्तर्गत शोध–कर्ता प्राथमिक एवं द्वितीय–स्तर के श्रोतों का सहारा तो लिया है, परन्तु उसका मूल संसाधन दिल्ली में स्थापित दरगाहों को सर्वेक्षण कर उनकी स्थापत्यकला के स्वरूप को निरीक्षणीय अध्ययन करना तथा इसके सम्पूर्ण परिवेश का अध्ययन करना है।

लगभग सभी दरगाहों के साथ एक बहुत बड़ा भू–भाग क़ब्रिस्तान के प्रयोग हेतु बाग के रूप में प्राप्त था। लेकिन लगभग सभी दरगाहों के इर्द–गिर्द स्थापित क़ब्रों को तोड़कर उसकी भूमि पर कब्जा कर लिया गया है, और उसपर मकान बना लिये गए हैं। चाहे वह शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह हो या शेख़ नसीरूद्दीन महमूद चिराग़–ए–देहली की दरगाह हो या ख्वाजा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी की दरगाह हो या सैय्यद हसन रसूलनुमा की दरगाह हो या क़दम शरीफ़ हो, सभी का यही हाल है। अधिकतर दरगाहों की भूमि पर डी० डी० ए० ने क़ब्जा जमा रखा है। जैसे दरगाह–ए–खुदा नुमा, दरगाह–ए–सैय्यद हसन रसूलनुमा, दरगाह–ए–शेख़ अबूबकर तूसी हैदरी उर्फ मटका पीर, दरगाह–ए–शेख़ जलालुद्दीन चिश्ती (शेख़ सराय), इन सभी पर डी० डी० ए० का कब्जा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान समय में इन दरगाहों की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। इन्हें लावारिस एवं व्यर्थ समझकर सामान्य जनता के अलावा सरकार एवं सरकारी विभाग डी० डी० ए० तथा आर्कलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया एवं एम० सी०डी० सभी ने इन दरगाहों की भूमि को अधिग्रहण करने का कार्य किया है। वक़्फ़–बोर्ड के अधीन दरगाहें भी अपनी मूल स्थिति में नहीं हैं, इनकी भी जमीन बेची जा रहीं हैं। क़ब्रों के चिन्ह मिटाए जा रहे हैं। वक़्फ़–बोर्ड के अधीन सैय्यद महमूद बहार (किलोखरी) एवं बीबी फ़ातिमा साम (काका नगर), की दरगाह के क़ब्रिस्तान की भूमि बेच दी गई।

कोई भी दरगाह केवल श्रद्धांजलि के रूप में स्थापित नहीं है, बल्कि वह दीर्घ कालीन राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक सम्बंधों के इतिहास को अपने स्वरूप में समेटे हुए है। जिस प्रकार मस्जिद, मक़बरा एवं किला किसी भी शासक के शासन पद्धति और उसके सामाजिक एवं धार्मिक रूचि एवं राजनीतिक स्थितियों का स्पष्टीकरण करता है, उसी प्रकार एक दरगाह की स्थापना एवं उससे सम्बंध रखने वाले शासक के धार्मिक विचार तथा लौकिक एवं परालौकिक जीवन में धार्मिक आस्था तथा उस दरगाह से अक़ीदत(प्रेम) को परिलक्षित करता है।

मध्यकालीन स्थापत्य कला के महत्त्व को समझने के लिए इन दरगाहों के महत्त्व एवं भूमिका को समझना अति आवश्यक है, तभी मस्जिद एवं मक़बरे के उस स्थान पर स्थापित होने के कारण एवं उसके महत्त्व को समझा जा सकता है, कि यह मक़बरा एवं मस्जिद इस स्थान पर क्यों स्थापित हुआ? उस समय इस स्थान का क्या महत्त्व था? इस ओर जब हम अपने ध्यान को आकृष्ट करते हैं तो पाते हैं कि शेख़ निजामुद्दीन औलिया की ख़ानक़ाह एवं दरगाह ग़यासपुर में स्थापित होने के कारण ग़यासपुर का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया, और शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया की अक़ीदत में अनेक मक़बरे स्थापित किये गये, इन सारे तथ्यों की ओर इस अध्ययन में विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है:–

इस प्रकार तेरहवीं शताब्दी ई0 में, ख़्वाजा अब्दुल अजीज बिस्तामी, मौलाना मजदूद्दीन हाजी (महरौली), सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (महरौली), बीबी सारा (महरौली), बीबी फातिमा साम (काका नगर), क़ाज़ी शेख़ हमीदुद्दीन नागौरी (महरौली), शेख अबूबकर तूसी हैदरी (प्रगति मैदान), बीबी जुलेखा (अर्चनी), शेख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल चिश्ती (अर्चनी), शेख़ निजामुद्दीन अबूलमौइद (महरौली), में इन सूफ़ियों की दरगाहें स्थापित की गईं।

तेरहवीं शताब्दी के अन्त एवं चौदहवीं शताब्दी ई0 के आरम्भ में, सैय्यद बदरूद्दीन शाह समरकन्दी (फिरोज़शाह कोटला), शेख़ रूकनुद्दीन फ़िरदौसी (किलोखरी), शेख़ शम्सुद्दीन उतावला (गयासपुर), मौलाना नासेहुद्दीन (महरौली), शेख़ शहाबुद्दीन आशिकुल्लाह (महरौली), शेख़ जियाउद्दीन रूमी (अर्चनी रोड), शेख इमादुद्दीन इस्माईल फ़िरदौसी (ग़यासपुर) में इन सूफ़ियों की दरगाहें स्थापित की गईं।

चौदहवीं शताब्दी ई0 में शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया (गयासपुर), अमीर खुसरू (ग़यासपुर), शेख़ नजीबुद्दीन फ़िरदौसी (महरौली), शेख़ उसमान सय्याह (खिड़की गाँव, शेख़ सराय), शेख़ सलाहुद्दीन (शेख़ सराय), शेख़ अल्लामा कमालुद्दीन (चिराग़ दिल्ली), शेख़ नसीरूद्दीन महमूद चिराग़–ए–देहली (चिराग़ दिल्ली), शेख़ हैदर (लाडो–सराय), क़दम शरीफ (पहाड़गंज), सैय्यद महमूद बहार(किलोखरी), शेख़ सैय्यद जलालुद्दीन चिश्ती (शेख़–सराय), शेख़ कबीरूद्दीन औलिया (शेख़ सराय) में इन सूफ़ियों की दरगाहें स्थापित की गईं।

पन्द्रहवीं शताब्दी ई0 में, शेख़ जैनुद्दीन अली (चिराग़ दिल्ली), मखदूम शेख़ समाउद्दीन सुहरवर्दी (महरौली), शेख़ यूसुफ़ क़त्ताल (शेख़ सराय), मख़दूम साहब (सीरी), तथा खुल्फ़ा–ए–शेख़ नसीरूद्दीन चिराग़–ए–देहली (चिराग़ दिल्ली), में इन सूफ़ियों की दरगाहें स्थापित की गईं।

सोलहवीं एवं सत्रहवीं शताब्दी ई0 में, मौलाना शेख़ जमाली (महरौली), इमाम जामिन(महरौली), शेख़ सुलेमान (महरौली), शेख़ अलाउद्दीन (शेख़ सराय), सैय्यद सदरूद्दीन शाह उर्फ़ भूरे मियाँ (शाहजहाँनाबाद), ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह (पहाड़गंज), शेख़ फ़रीदुद्दीन बुख़ारी (बेगमपुर), शेख़ अब्दूलहक़ मुहद्दिस देहलवी (महरौली), शाह सरमद शहीद (शाहजहाँनाबाद), सैय्यद आरिफ़ अली शाह (अलीगंज), सैय्यद अबूल कासिम सब्जवारी (शाहजहाँनाबाद), सैय्यद हसन रसूलनुमा (गुलाबी बाग़), ख़ुदा–नुमा (भूली भटियारी), नूर–नुमा पहाड़गंज।

अटठाहरवीं शताब्दी ई0 में, शेख़ मुहम्मद चिश्ती साबरी, मिर्जा अब्दूल कादिर बेदिल (प्रगति मैदान), सैय्यद शाह आलम (वजीराबाद), शेख़ नूर मुहम्मद बदायुँनी (गयासपुर), शाहे मरदाँ (अलीगंज), शेख़ शाह कलीमुल्लाह शाहजहाँनाबादी (शाहजहाँनाबाद), शाह मुहम्मद फ़रहाद (बगीची पीरजी), हाफ़िज़ सादुल्लाह नक़्शबन्दी (शाहजहाँनाबाद), शाह सादुल्लाह गुल्शन (कुतुब रोड पहाड़ गंज), शाह वलीउल्लाह (मेहदियान), शेखुल आलेमिन हाजी अताउल्लाह (कश्मीरी गेट), मिर्जा मज़हर जाने जानाँ (शाहजहाँनाबाद), ख़्वाजा अली अहमद एहरारी (चौंसठ खंभा), मौलाना फख़रूद्दीन चिश्ती (महरौली), शाह साबिर अली चिश्ती साबरी (दरियागंज), मीरान शाह नानूँ एवं शाह जलाल (फ़तेपुरी मस्जिद), मीर मोहम्मदी (चितली क़ब्र शाहजहाँनाबाद), शाह मुहम्मद आफ़ाक़ (मुगलपुरा), में इन सूफ़ियों की दरगाहें स्थापित की गईं।

उपर्युक्त इन्हीं दरगाहों के अध्ययन के उद्देश्य से, इन्हें विषय वस्तु बनाकर अध्ययन किया गया है, जिसका विषय है:– "दिल्ली में स्थापित मध्यकालीन सूफ़ियों की दरगाहों की स्थापत्यकला की विशेषताओं का अध्ययन, (तेरहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक)" जिसका मूल उद्देश्य इस प्रकार है:–

➔ दिल्ली में स्थापित मध्यकालीन सूफ़ियों की दरगाहों को ढूंढकर निकालना